प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम

W.W I के परिणाम

- **आर्थिक परिणाम:** प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेने वाले देशों का बहुत अधिक धन खर्च हुआ। जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी अर्थव्यवस्था से प्राप्त धन का लगभग 60% हिस्सा युद्ध में खर्च किया। देशों को करों को बढ़ाना पड़ा और अपने नागरिकों से धन भी उधार लेना पड़ा। उन्होंने हथियार खरीदने तथा युद्ध के लिये आवश्यक अन्य चीजों हेतु भी अपार धन व्यय किया। इस स्थिति ने युद्ध के बाद मुद्रास्फीति को जन्म दिया।

- **राजनीतिक परिणाम:** प्रथम विश्व युद्ध ने चार राजतंत्रों को समाप्त कर दिया। रूस के सीज़र निकोलस द्वितीय, जर्मनी के कैसर विल्हेम, ऑस्ट्रिया के सम्राट चार्ल्स और ओटोमन साम्राज्य के सुल्तान को पद छोड़ना पड़ा।

  - प्रथम विश्व युद्ध के बाद विश्व मानचित्र में परिवर्तन आया, साम्राज्यों के विघटन के साथ ही पोलैंड ,चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया जैसे नए राष्ट्रों का उदय हुआ।
  - ऑस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रॉस और रूस की सीमाएँ बदल गईं।
  - बाल्टिक साम्राज्य, रूसी साम्राज्य से स्वतंत्र कर दिये गए।
  - एशियाई और अफ्रीकी उपनिवेशों पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार होने से वहाँ भी परिस्थिति बदली। इसी प्रकार जापान को भी अनेक नए क्षेत्र प्राप्त हुए। इराक को ब्रिटिश एवं सीरिया को फ्रॉसीसी संरक्षण में रख दिया गया।
  - फिलिस्तीन, इंग्लैंड को दे दिया गया।

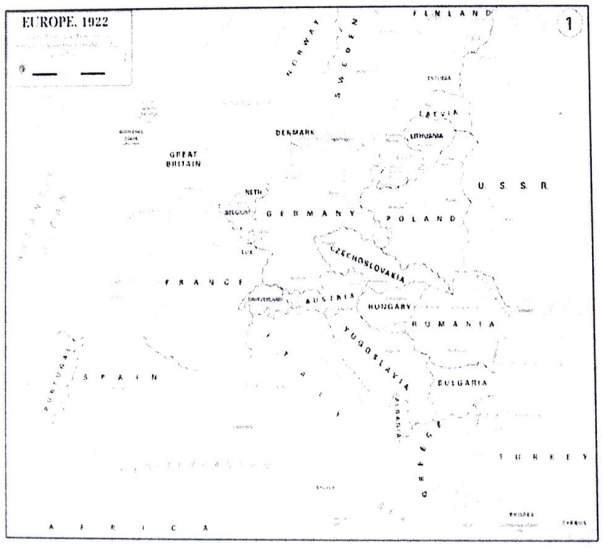

- **सामाजिक परिणाम:** विश्व युद्ध ने समाज को पूरी तरह से बदल दिया। जन्म दर में गिरावट आई क्योंकि लाखों युवा मारे गए (आठ मिलियन लोग मारे गए), लाखों घायल हो गए तथा कई अन्य विधवा और अनाथ हो गए। नागरिकों ने अपनी जमीन खो दी और अन्य देशों की ओर प्रवास किया।
  - महिलाओं की भूमिका में भी परिवर्तन आ गया। उन्होंने कारखानों और दफ्तरों में पुरुषों का स्थान लिया।
  - उन्होंने कारखानों और कार्यालयों में पुरुषों की जगह लेने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। कई देशों ने युद्ध समाप्त होने के बाद महिलाओं को अधिक अधिकार दिये जिसमें वोट देने का अधिकार भी शामिल था।
  - उच्च वर्गों ने समाज में अपनी अग्रणी भूमिका खो दी। युवा, मध्यम और निम्न वर्ग के पुरुषों तथा महिलाओं ने युद्ध के बाद अपने देश के पुनर्गठन की मांग की।
- **वर्सेल्स/वर्साय की संधि (Treaty of Versailles):** 28 जून, 1919 को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर के साथ प्रथम विश्व युद्ध आधिकारिक रूप से समाप्त हो गया। वर्साय की संधि दुनिया को दूसरे युद्ध में जाने से रोकने का प्रयास थी।

वर्सेल्स/वर्साय की संधि के कुछ प्रमुख बिंदु

यह संधि अलग-अलग खंडों में विभाजित थीं, जिनके अंदर कई धाराएँ शामिल थीं।

- प्रादेशिक खंड:
  - फ्राँस ने अल्सास और लोरेन को वापस पा लिया।
  - यूपेन और माल्देमी बेल्जियम के हाथों में चले गए।
  - पूर्वी क्षेत्रों को पोलैंड ने नष्ट कर दिया था जिससे पूर्वी प्रुशिया क्षेत्रीय रूप से अलग-थलग पड़ गया था।
  - डेंटिग और मेमेल, पूर्व बाल्टिक जर्मन शहरों को मुक्त शहर घोषित किया गया था।
  - डेनमार्क ने उत्तरी श्लेस्विग-होल्स्टीन पर कब्जा कर लिया।
  - जर्मनी ने अपने सभी उपनिवेश खो दिये और विजेता देशों ने उन्हें वापस ले लिया।
- सैन्य खंड:

- जर्मन नौसेना पर कठोर प्रतिबंध।
- सेना की संख्या में नाटकीय कमी (केवल 100,000 सैनिकों की अनुमति तथा टैंक, विमान और भारी तोपखाने रखना निषेध किया गया।)
- राइनलैंड क्षेत्र का विसैन्यीकरण।

- युद्ध सुधारः
  - इस संधि ने जर्मनी और उसके उन सहयोगियों को कुल 'हानि और क्षति' के लिये ज़िम्मेदार ठहराया, जो कि मित्र राष्ट्रों द्वारा पीड़ित थे और इसके परिणामस्वरूप उन्हें युद्ध के पुनर्मूल्यांकन के लिये मजबूर किया गया था।

अन्य संधियाँ

- न्यूली की संधि (Newly Treaty) बुल्गारिया के साथ हस्ताक्षरित
  - छोटे बाल्कन देशों को बहुत अधिक क्षेत्रीय नुकसान हुआ तथा बुल्गारिया के अनेक क्षेत्र यूनान, युगोस्लाविया और रोमानिया को दे दिया गया।
- सेवर्स की संधि (Sevres Treaty) तुर्की के साथ हस्ताक्षरित
  - सेवर्स की संधि बेहद कठिन थी और इसने तुर्की के राष्ट्रीय विद्रोह का नेतृत्व किया। इसके अंतर्गत ओटोमन साम्राज्य विखंडित कर दिया गया तथा इसके अनेक क्षेत्र यूनान और इटली को दे दिये गए। फ्राँस को सीरिया तथा पैलेस्तीन, इराक और ट्रांसजॉर्डन को ब्रिटिश मैंडेट के अंतर्गत कर दिया गया।

हालाँकि युद्ध के कारण कई अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक और वैचारिक परिवर्तन भी देखे गए।

- अमेरिका, जिसने अपने क्षेत्र में संघर्ष का अनुभव किये बिना युद्ध जीत लिया था, पहली विश्व शक्ति बन गया।
- युद्ध में पुरुषों के संलग्न होने के कारण महिलाएँ कार्यबल में शामिल हुईं, जो महिलाओं के अधिकारों के लिये एक बड़ा कदम था।
- युद्ध के दौरान चरम राष्ट्रवाद का अनुभव किया गया, जिसने कम्युनिस्ट क्रांति का डर पैदा किया तथा कुछ देशों के मध्यम वर्ग की आबादी को चरम अधिकारों की मांग की ओर बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया। इसने फासीवादी आंदोलनों के प्रति आकर्षण भी पैदा किया।
- राष्ट्र संघ का गठन : राष्ट्र संघ प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विकसित एक अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक समूह था, जिसका गठन देशों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए किया गया।